



प्रकाशक - स.प्र.प्र.सं. पुस्तकालय

अक्टूबर 2025

खंड - 4, अंक - 9

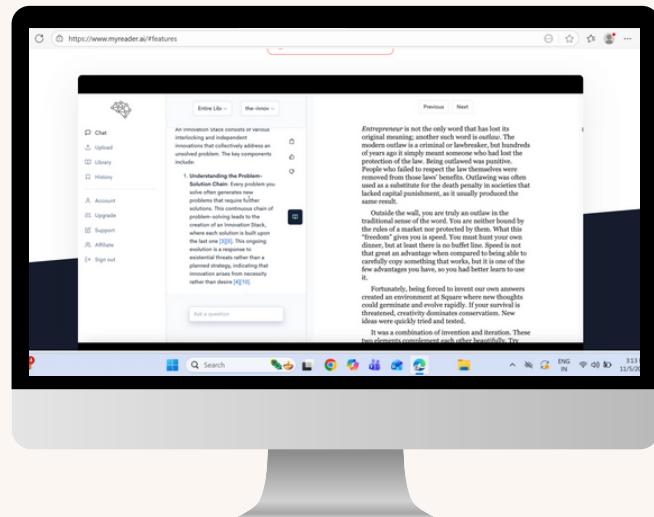
# आई.एस.टी.एम. लाइब्रेरी

## इन्फोर्मेशन बुलेटिन

इस सूचना बुलेटिन का उद्देश्य आईएसटीएम पुस्तकालय की सेवाओं और गतिविधियों के बारे में जागरूकता फैलाना है और सभी उपयोगकर्ताओं के उपयोग के लिए ओपन एक्सेस के रूप में उपलब्ध अनुसंधान और प्रबंधन उपकरणों के बारे में जानकारी प्रदान करना है।

### MY READER AI - AN AI POWERED READING ASSISTANT

**My Reader AI** आज सूचना अनेक प्रारूपों में और अनेक स्रोतों से प्राप्त होती है। ऐसे समय में MyReader एक आधुनिक उपकरण के रूप में उपलब्ध हुआ है, जिसका उद्देश्य सदियों से चले आ रहे ज्ञान-अर्जन की परंपरा को अधिक सुगम बनाना है। MyReader पर आप पुस्तकें, PDF, Word दस्तावेज़, PowerPoint प्रस्तुतियाँ, वेब लेख, यहाँ तक कि YouTube वीडियो तक अपलोड कर सकते हैं और उनसे तुरंत सार्थक तरीके से संवाद कर सकते हैं।



#### मुख्य विशेषताएँ:

- अपनी लाइब्रेरी से संवाद:** किसी एक दस्तावेज़ या पूरे संग्रह से संवाद के माध्यम से प्रश्न पूछ कर संक्षिप्त में उत्तर प्राप्त किया जा सकता है।
- टेक्स्ट-टू-स्पीच सुविधा:** किसी भी अपलोड किए गए दस्तावेज को 50 से अधिक आवाजों और 30 से अधिक भाषाओं में ऑडियो में बदल सकते हैं, जिससे चलते-फिरते भी अध्ययन संभव है।
- स्मार्ट उद्धरण और नेविगेशन:** उत्तर देते समय, यह आपको मूल दस्तावेज़ के उसी पृष्ठ पर ले जाता है जहाँ सूचना वास्तव में उपलब्ध है।
- सुव्यवस्थित और निजी संग्रह:** आप अपना निजी संग्रह बना सकते हैं और किसी भी डिवाइस से उस संग्रह को एक्सेस कर सकते हैं।

चाहे आप शोध-पत्रों का विश्लेषण करने वाले शोधकर्ता हों या भारी पढ़ाई-कार्य से जुड़े पेशेवर — MyReader गति और स्पष्टता प्रदान करता है। यह पारंपरिक अध्ययन मूल्यों का सम्मान करता है, साथ ही हमारे डिजिटल युग की व्यावहारिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता है।



चित्र तथा जानकारी का सोर्स <https://www.myreader.ai/>



इस विषय पर अधिक जानकारी अथवा उपयोग हेतु दिए गए QR कोड को अपने मोबाइल कैमरे से स्कैन करें।



# ISTM Library Information Bulletin

The purpose of this Information Bulletin is to spread awareness about the services and activities of the ISTM Library and Research and Management Tools available as Open Access for the use of all the users.

## MY READER AI - AN AI POWERED READING ASSISTANT

**My Reader AI** In an age where information comes in every format and from countless sources, the tool MyReader stands out as a modern solution rooted in the traditional goal of mastering knowledge. With MyReader you can upload books, PDFs, Word documents, PowerPoint slides, web articles — even YouTube videos — and immediately engage with them in new ways.

### Key features:

- Chat with your library:** Ask questions of a single document or your full collection and receive concise answers with page-level citations.
- Text-to-speech capability:** Convert any uploaded text into natural audio across 50+ voices and 30+ languages, allowing learning on the go.
- Smart citations & navigation:** When you ask something, you're directed to the exact page in the original document that contains the answer.
- Organised, private library:** Create collections, access from any device, and rest assured that your uploads remain private.

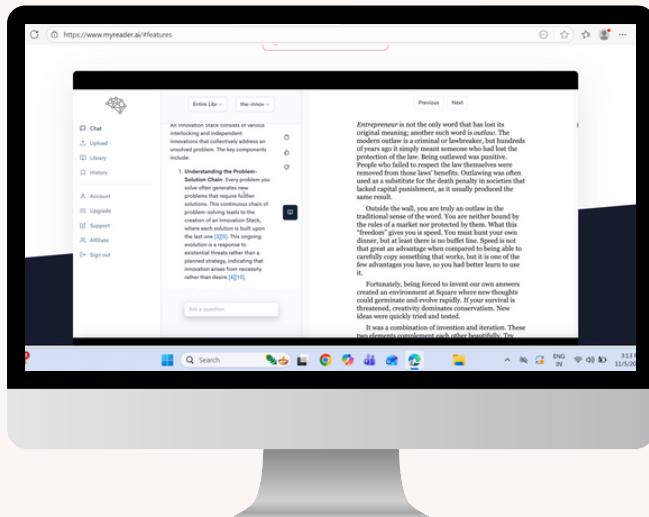
Whether you are a researcher analysing multiple papers, or a professional dealing with heavy reading workflows, MyReader brings speed and clarity without losing the depth of traditional study. It honours the value of reading while fitting into our busy, digital era.

Source of the image and information: <https://www.myreader.ai/>

SCAN THIS QR CODE TO KNOW MORE AND ACCESS



Please stay tuned for more information in upcoming issues of this information bulletin.



# प्रबंधन तथा प्रशिक्षण उपकरणों की मासिक चर्चा

## अक्टूबर 2025



यह पृष्ठ प्रशिक्षण तथा प्रबंधन से सम्बंधित विषय पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है।

### एक प्रशिक्षु की पूर्वधारणाएँ और डर

**उद्देश्य:** प्रतिभागियों को यह मौका देना कि वे अपने साथ लाई गई किसी भी गलतफहमी या भ्रम को व्यक्त, साझा और कम कर सकें जो उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में सोच रखी हैं।

**प्रक्रिया:** कुछ ट्रेनिंग, सेमिनार और वर्कशॉप्स में प्रतिभागी बड़े भौगोलिक क्षेत्र से आ सकते हैं, उन्हें संभावित कार्यक्रम के बारे में बहुत कम जानकारी हो सकती है, वे एक-दूसरे को नहीं जानते होते, या उन्हें यह नहीं पता होता कि अपेक्षित प्रशिक्षु व्यवहार क्या होता है। ऐसे में उनकी कुछ पूर्वधारणाओं को साझा करने के लिए एक मंच देना जरूरी हो सकता है।



सदस्यों को 4-6 लोगों के छोटे समूहों में बाँट दें। हर समूह से एक रिकॉर्डर चुनने को कहें (इसके लिए एक फ्लिपचार्ट या नोट पेपर देना चाहिए)। उनसे जल्दी-जल्दी यह सवाल पूछने को कहें, "आज यहाँ आने से पहले आपके मन में कौन से डर, चिंताएँ, या पूर्वधारणाएँ थीं?" थोड़े समय में जवाब इकट्ठा करने के बाद, हर समूह के रिपोर्टर से कहें कि वे सारी सूची पूरे समूह के साथ साझा करें। इससे ट्रेनर को प्रशिक्षुओं की ज़रूरतों को समझाने का अच्छा मौका मिलेगा और वे इन बिंदुओं का इस्तेमाल कर यह बता सकते हैं कि कार्यक्रम उनके डर या चिंताओं से कैसे संबंधित है या नहीं है, और इससे आश्वासन और समर्थन भी मिलेगा।

**चर्चा के प्रश्न:** हर समूह ने कौन-कौन सी चिंताएँ या विचार रखे? (इनके उदाहरण हो सकते हैं):

- क्या मैं यहाँ सबसे बड़ा या सबसे छोटा हूँ?
- प्रशिक्षण कार्यक्रम में कैसे व्यवहार करना चाहिए?
- सभी मुझसे ज्यादा अनुभवी होंगे।
- क्या वे सभी मेरी तुलना में ज्यादा (या कम) आरामदायक कपड़े पहनेंगे?
- क्या हर कोई शॉर्ट फॉर्म्स, एक्रोनिम्स में बात करेगा या सिर्फ इंग्लिश में बोलेगा?
- मुझे इस कार्यक्रम से क्या मिलेगा?
- मुझे किस तरह के सवाल पूछने चाहिए?
- कमरा, कार्यक्रम, ट्रेनर आदि कैसे होंगे?

**ट्रेनर का रोल:** ट्रेनर इन चिंताओं को कैसे कम कर सकता है? (जैसे: ड्रेस कोड समझाना, इस्तेमाल किए गए शॉर्ट फॉर्म्स/एक्रोनिम्स की व्याख्या करना, प्रश्नों के लिए प्रोत्साहित करना आदि।)

**आवश्यक सामग्री:** फ्लिपचार्ट या नोट पेपर

**अनुमानित समय:** 20-30 मिनट

**संदर्भ:** Scannell, Edward E. और Newstrom, John W. द्वारा रचित "The Complete Games Trainers Play", McGraw Hill, न्यूयॉर्क, 1994, पृष्ठ 2.23 से।

# Monthly Talk of Management & Training Tools

October 2025



This page provides a brief overview on topics related to training and management.

## PRECONCEIVED IDEAS AND FEARS OF A TRAINEE

**Objective:** To allow participants to express, share, and reduce the misconceptions they may have brought with them to a training program.

**Procedure:** In some Trainings, Seminars and workshops, participants may be drawn from a large geographical area, may know very little about the prospective program, may not know each other, or may not know what comprises expected trainee behavior. Consequently, a forum for exchanging Some preconceptions may be appropriate.



Form the members, into small groups of 4-6 persons. Have each group select a recorder (a flipchart or notepaper should be provided). Ask them to quickly respond to the question, *“What fears, concetns, or preconceived notions did you have prior to coming here today?”* After a brief response-gathering period, ask the reporters to present their lists to the entire group. This will present excellent opportunities for the trainer to empathize with trainee needs, as well as provide reassurance and support by using the items to indicate how the training program does/does not relate to those concerns.

**Discussion Questions:** What were some of the fears/concerns/notions expressed in each group? (Examples may include the following):

- Will I be the oldest or youngest person?
- How to act appropriately at the training program?
- Everyone will be more experienced than I am.
- Will they be more (less) casually dressed than I am?
- Will everyone speak in acronyms and abbreviations or in English only?
- What will I get out of the program?
- What kind of questions should I ask?
- What will the room/program/trainers, etc., be like?

**Trainer's Task:** What can a trainer do to diminish those concerns? (e.g. explain the dress code, define all acronyms used, solicit questions, etc.)

**Materials Required:** Flipcharts or notepaper

**Time Required:** 20-30 Minutes

**Reference:** Scannell, Edward E. and Newstrom John W., "The Complete Games Trainers Play," McGrow Hill, New York, 1994, pp. 2.83.



## नव-आगमन से / From the New Arrivals

October 2025

खंड के इस भाग में नव आगमन सेक्शन से एक या दो पुस्तकों के कवर पेज के साथ साथ उनका संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है। इसके साथ ही यहाँ नवीनतम ट्रेंडिंग सामयिकियों की जानकारी भी दी जाती है।

### Never Split The Difference

OVER 2 MILLION COPIES SOLD

'This book blew my mind.'  
Adam Grant



# NEVER SPLIT THE DIFFERENCE

NEGOTIATING AS IF YOUR LIFE DEPENDED ON IT

CHRIS VOSS  
WITH TAHIL RAZ

Format: Book (Paperback)

Author: Voss, Chris

Pub & Desc: London; Penguin Random House ;  
c2017, 274; 19.8 cm.

**It's all about:** Never Split the Difference by Chris Voss is a book about mastering negotiation skills based on the author's experience as an FBI hostage negotiator. Voss shares practical, real-life techniques that help you communicate better, understand emotions, and influence others. Instead of compromising or splitting the difference, he teaches you how to use empathy, active listening, and smart questioning to reach the best outcome for both sides. The book shows how these strategies work in everyday situations—like work, business, or relationships—so you can stay calm, build trust, and achieve more successful results in any negotiation.

### महाभोज

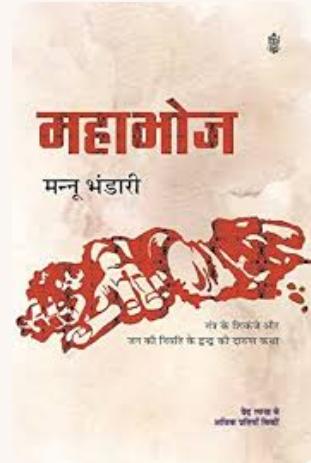
Format: Book (Hardbound)

Author: भंडारी, मनू

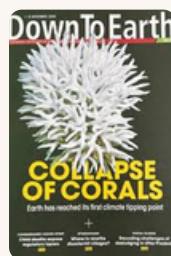
Pub. & Desc. नई दिल्ली; राधाकृष्ण प्रकाशन; c2024, 168p;  
22.3 cm.

ISBN: 978-81-7119-839-9

**Its all about:** 'महाभोज' मनू भंडारी का एक राजनीतिक उपन्यास है जो लोकतंत्र में आम आदमी की बेबसी और भ्रष्ट व्यवस्था की सच्चाई को उजागर करता है। कहानी दिखाती है कि कैसे सत्ता, राजनीति और नौकरशाही मिलकर जनता के अधिकारों को कुचल देते हैं। 'दा साहब' जैसे नेता पूरे तंत्र को अपने इशारों पर नचाते हैं, जबकि ईमानदार और सच्चे लोग हाशिए पर धकेल दिए जाते हैं। यह उपन्यास जनता के संघर्ष, शोषण और व्यवस्था के छलावे की गहरी झलक देता है। 'महाभोज' सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि समाज और राजनीति का तीखा आईना है।



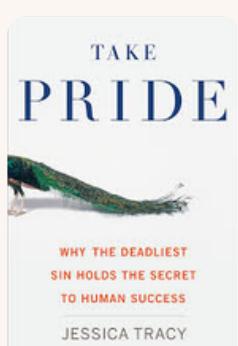
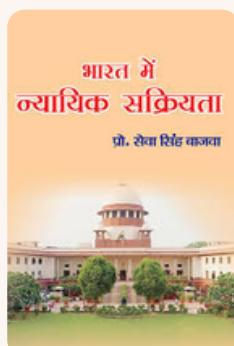
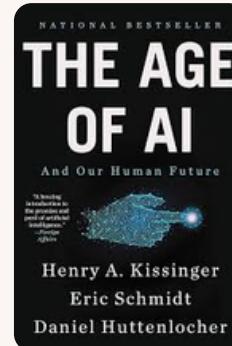
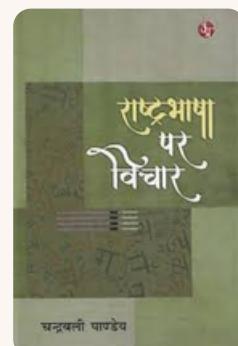
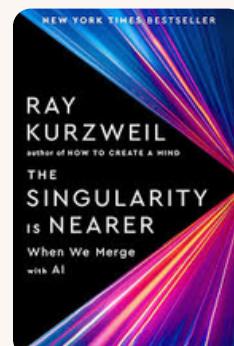
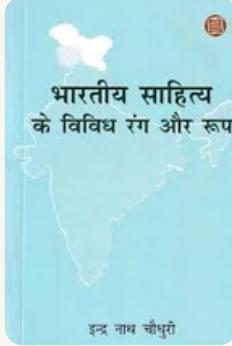
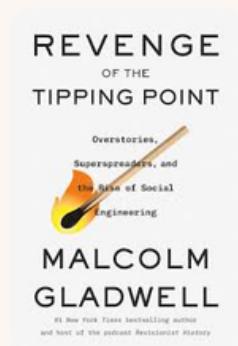
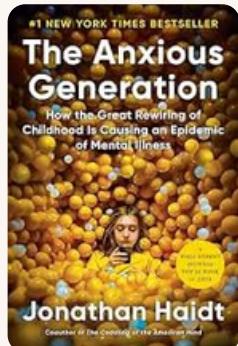
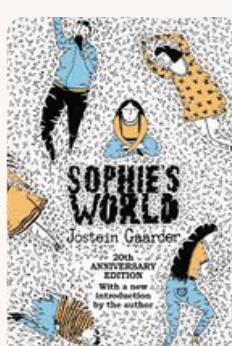
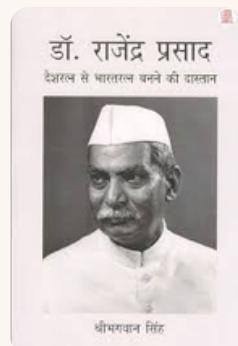
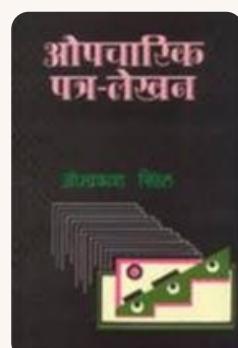
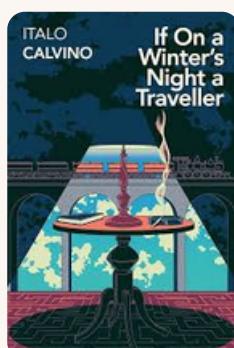
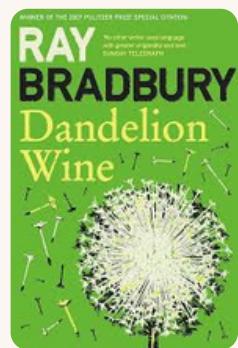
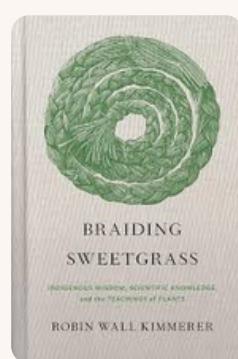
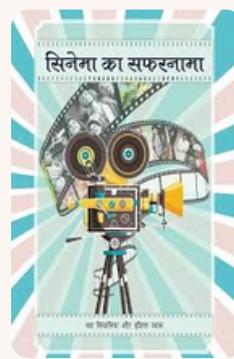
### पुस्तकालय में इस सप्ताह के ट्रेंडिंग सामयिकियाँ



कृपया किसी भी प्रकार की अधिक जानकारी, सूचना अथवा सुझाव देने के लिए पवन श्रीवास्तव, सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी को संपर्क करें। @ pawan.shrivastav@gov.in / library-istm@gov.in or @ 26737712

## इस माह में जारी पुस्तकें / BOOKS IN TREND THIS MONTH

अक्टूबर / October 2025

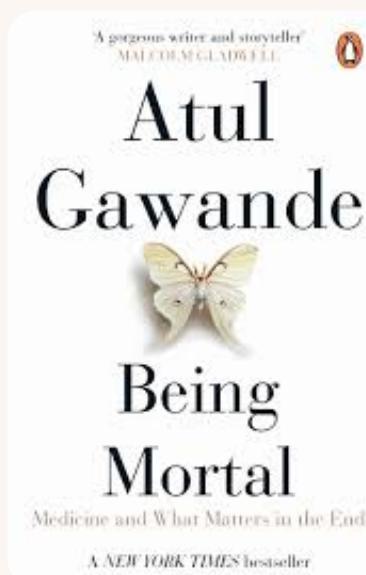




## पुस्तक समीक्षा / BOOK REVIEW

अक्टूबर / Octob 2025

**Title: Being Mortal: Medicine and What Matters in the End**



Atul Gawande's "Being Mortal" is a profound and deeply human exploration of life, aging, and the inevitability of death. Rooted in his experiences as a surgeon, the book goes beyond medicine to offer reflections on dignity, autonomy, and the choices that define the quality of our final days. Gawande writes with extraordinary compassion and honesty, skillfully blending clinical insight with personal narrative, including the intimate story of his own father's illness.

The book consists of eight chapters, each illuminating a facet of the aging and dying process.

From the decline of independence in old age to the challenges of institutional care, Gawande examines how modern medicine often prioritizes survival over well-being. He shares compelling stories of nursing homes, assisted living facilities, and innovative caregivers who strive to preserve meaning, purpose, and autonomy for the elderly. What resonates most is his insistence that a good life in its final phase is defined not by medical interventions, but by what the individual values most — connection, activity, dignity, and choice.

The book also delves into the difficult conversations that families and doctors must confront — such as those about prognosis, priorities, and trade-offs. Gawande demonstrates that courage is not simply enduring illness, but making informed, value-driven decisions even in the face of uncertainty. He challenges readers to rethink our relationship with mortality, urging us to consider what truly matters when time is limited.

"Being Mortal" is both heart-wrenching and inspiring. It left me reflecting on my own mortality, the fragility of independence, and the importance of empathy in caregiving. Gawande's work is a call to embrace life fully, even as it nears its end, and a reminder that how we care for the dying defines not only our medical systems, but our humanity itself.



**-Manab Pratim Sarma  
Trainee - ISC-LISP-02**